

भारत सरकार  
संस्कृति मंत्रालय  
लोक सभा

अतारांकित प्रश्न संख्या: 143

उत्तर देने की तारीख: सोमवार, 21 जुलाई 2025

30 आषाढ़, 1947 (शक)

भारतीय सांस्कृतिक विरासत को बढ़ावा देना

143. श्री अनिल फिरोजिया:

क्या संस्कृति मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

- (क) क्या सरकार ने 'अमृत काल' के दौरान वैश्विक स्तर पर भारतीय सांस्कृतिक विरासत को बढ़ावा देने हेतु कोई नई योजना आरंभ की है और यदि हाँ, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है;
- (ख) सरकार द्वारा सम्पूर्ण देश में पुरातात्विक स्मारकों के संरक्षण और डिजिटलीकरण हेतु उठाए गए/उठाए जा रहे उपायों का ब्यौरा क्या है;
- (ग) क्या सरकार ने 'एक भारत श्रेष्ठ भारत कार्यक्रम' के अंतर्गत विभिन्न राज्यों के बीच सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रमों हेतु कोई नई योजना आरंभ की है और यदि हाँ, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है;
- (घ) क्या सरकार ने ग्रामीण क्षेत्रों में पारंपरिक कलाओं और कौशल को बढ़ावा देने के लिए कोई नई पहल आरंभ की है और यदि हाँ, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है; और
- (ङ) क्या सरकार ने स्वतंत्रता संग्राम के गुमनाम नायकों को सम्मानित करने के लिए कोई डिजिटल अभिलेखागार या संग्रहालय स्थापित किया है और यदि हाँ, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है?

उत्तर  
संस्कृति और पर्यटन मंत्री  
(श्री गजेन्द्र सिंह शेखावत)

(क): उपलब्ध लिखित प्रमाण के आधार पर, कोई नई योजना आरंभ नहीं की गई है।  
(ख): भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण ने संरक्षित स्मारकों और क्षेत्रों के अनुरक्षण और संरक्षण हेतु अनेक उपाय किए हैं। संरक्षण की स्थिति और आवश्यकताओं का आँकलन करने के लिए संरक्षित स्मारकों और क्षेत्रों का समय-समय पर निरीक्षण किया जाता है। राष्ट्रीय संरक्षण नीति का अनुपालन करते हुए, संरक्षण की आवश्यकता और संसाधनों की उपलब्धता को ध्यान में रखते हुए, स्मारकों का संरक्षण किया जाता है। इसके अतिरिक्त, भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण डिजिटल अभिलेखों और स्थिति का प्रतिचित्रण (मैपिंग) करने के माध्यम से स्मारकों के दस्तावेजीकरण में बेहतरी ला रहा है।

(ग): शिक्षा विभाग ने एक भारत श्रेष्ठ भारत (ईबीएसबी) के अंतर्गत, विभिन्न राज्यों के बीच सांस्कृतिक आदान-प्रदान करने की गतिविधियों के लिए कोई योजना शुरू नहीं की है। तथापि, ईबीएसबी के अंतर्गत दो कार्यक्रम नामतः युवा संगम और काशी तमिल संगम (केटीएस) आयोजित किए जाते हैं।

युवा संगम के अंतर्गत, युग्मित राज्यों के युवाओं के सांस्कृतिक-सह-शैक्षिक आदान-प्रदान दौरे आयोजित किए जाते हैं, जबकि केटीएस कार्यक्रम के अंतर्गत, दो प्राचीन शिक्षण केंद्रों अर्थात् काशी और तमिलनाडु के बीच सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं।

(घ): क्षेत्रीय सांस्कृतिक केंद्रों (जेसीसी) ने अक्टूबर, 2024 से मार्च, 2025 तक विलुप्त लोक एवं जनजातीय कला उत्थान महोत्सव का आयोजन किया, जो सभी सात सांस्कृतिक क्षेत्रों में मंडलीय स्तर पर आयोजित किया गया था। यह महोत्सव वस्त्र मंत्रालय, राज्य सरकारों और शैक्षणिक संस्थानों का एक संयुक्त प्रयास था। इसमें प्रत्येक सप्ताह में 15-21 दिनों की गहन कार्यशालाएं आयोजित की गईं, जिनमें पारंपरिक कला रूपों के बारे में व्यापक प्रशिक्षण और जानकारी प्रदान करते हुए देश के विविध कला रूपों को पुनर्जीवित और जीवित रखने के लिए एक सुदृढ़ मंच का निर्माण किया गया।

(ड.): सरकार ने स्वतंत्रता संग्राम के नायकों को सम्मानित करने के लिए एक समर्पित डिजिटल अभिलेखागार स्थापित किया है। उल्लेखनीय है कि आज़ादी का अमृत महोत्सव वेबसाइट का ऐतिहासिक भाग अब अमृत काल (<https://amritkaal.nic.in/>) में परिवर्तित हो गया है, जो मुख्य रूप से आज़ादी का अमृत महोत्सव के अंतर्गत 'स्वतंत्रता संग्राम' विषय पर केंद्रित है। यह भाग गुमनाम नायकों, स्वतंत्रता आंदोलनों, महत्वपूर्ण पड़ावों तथा उन शहीदों के बलिदानों की जीवंत कहानियों की याद दिलाता है, जिन्होंने हमारी स्वतंत्रता की यात्रा को आकर दिया। इसे आठ उप-खंडों में निम्नानुसार व्यवस्थित किया गया है:

1. डिजिटल ज़िला संग्रह- भारत के स्वतंत्रता संग्राम की ज़िलेवार गाथा-चार श्रेणियों में: व्यक्ति और व्यक्तित्व, घटनाएँ और घटनाक्रम, अज्ञात खजाने (निर्मित और प्राकृतिक धरोहर) और जीवंत परंपराएँ तथा कला रूप।
2. गुमनाम नायक - उन गुमनाम स्वतंत्रता सेनानियों को श्रद्धांजलि जिन्हें अक्सर भुला दिया जाता है।
3. सार्वजनिक योगदान पोर्टल- आम नागरिक यहां कहानियां साझा कर सकते हैं।
4. स्वतंत्रता स्वर - प्रतिबंधित क्रांतिकारी साहित्य, जिसमें 11 भाषाओं में क्रांतिकारी कविताओं की 509 डिजिटल फ़ाइलें और प्रमुख हस्तियों द्वारा कविता पाठ शामिल हैं।
5. स्वतंत्रता आंदोलन पर पॉडकास्ट।
6. राज्यगीत - राज्यों/केंद्र शासित प्रदेशों की मधुर पहचान।
7. स्वतंत्रता कोना - भारत के संघर्ष की कहानियाँ।
8. विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस और एकता महोत्सव जैसे आयोजनों की स्मृति में प्रदर्शनियाँ।

ये सभी पहले उन कहानियों को संरक्षित, अभिलेखित और साझा करती हैं, जो कभी बिखरी या छिपी हुई थीं ताकि वे जनता, शोधकर्ताओं और विद्वानों के लिए आसानी से सुलभ हो सकें। इसके अलावा, भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण ने दिल्ली के लाल किले में 'आज़ादी के दीवाने नामक' एक संग्रहालय स्थापित किया है जो पूरी तरह से स्वतंत्रता संग्राम के अज्ञात और गुमनाम नायकों के सम्मान में समर्पित है।

\*\*\*\*\*